Date of Submission: 1/3/2026
Date of Review: 14/4/2026
Date of Publication: April 2026

सैनी (सैनिक) क्षत्रिय समाज का इतिहास

डॉ. प्रतिभा सांखला

परिचय

सैनी, क्षत्रिय एवं माली जाति का इतिहास प्राचीन और गौरवमयी है। यह जाति उत्तर भारत, राजस्थान और मारवाड़ में मुख्यतया अधिक पायी जाती है। इन्हें भगवान कृष्ण के वंशज माना जाता है। मारवाड़ में सैनी क्षत्रिय (माली) जाति के इतिहास की जानकारी ब्रह्मभट्टों व सरकारी रिपोर्ट आदि से मिलती है। ये जाति किसी समय क्षत्रिय वर्ण में आती थी लेकिन पेशा बदलने से ये माली कहलाने लगे। राजस्थान में माली दो प्रकार के है महुर माली एवं राजपूत माली। मध्ययुग में राजपूतों ने मुसलमानों के अत्याचारों के कारण मालियों का धन्धा अपना लिया अत: जो मूल रूप से माली थे वे माली कहलाये और जिन राजपूतों ने नया धन्धा अपनाया वे राजपूत कहलाये और सैनी क्षत्रिय के नाम से जाने गये। माली समुदाय के संगठनों ने अपने क्षत्रिय होने के प्रमाण देते हुए खुद को सैनी क्षत्रिय के रूप में प्रस्तुत किया है।

प्राचीन समय में वर्ण व्यवस्था प्राय: गुण कर्मानुसार होती थी। मनु ने कहा है –

ब्राह्मण: क्षत्रियों वैश्य: त्रयोवर्णो द्विजातय:
चतुर्थ एक जातिस्तु शूद्रो नास्तितु पंचम:1

इस श्लोक से पता चलता है कि मनु के अनुसार मूल चार वर्ण है। लेकिन शूद्र को एक जाति (केवल जन्म द्वारा) कहा गया है। टीकाकारों के अनुसार उसके बाद बताई गई अन्य सभी समूह इसी व्यवस्था से उत्पन्न जातियां है। इसी प्रकार ऋग्वेद में वर्ण के बारे में बताया गया है कि –

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य: कृत:।
उरु तदस्य यदैश्य: पद्धयां शूद्रो अजायत:।।12।।

ब्राह्मण समाज का मुख है, राजन्य इसकी दो भुजाएँ है। पैर और जंघा वैश्य तथा पग शूद्र या परिक्रम करने वाले है, उसी प्रकार शरीर में भी विद्वानों ने देहात्मा के विभिन्न भागों की कल्पना की है।[2] इन चारों वर्णों में कोई छोटा या बड़ा नहीं है। सब अपने-अपने

कर्मों में श्रेष्ठ है। इसलिए चारों वर्णों को एक-दूसरे का आदर करते हुए अपने-अपने धर्मों या कर्त्तव्य का पालन बराबर करते रहना चाहिए।[3] जाति एक सामाजिक व्यवस्था है जिसमें कुछ नियंत्रणों के अधीन प्रत्येक व्यक्ति को अपना जीवन बिताना पड़ता है। 'जन' का अर्थ जन्मदाता होता है। अत: जाति जन्म से ही व्यक्ति को एक विशेष सामाजिक स्थिति मिल जाती है जिसको वह जन्म भर परिवर्तित नहीं कर सकता।[4]

राजस्थान में जातिवाद अन्य प्रांतों की भांति ही काफी फैला हुआ है।[5] राजस्थान एक ऐसा प्रदेश है जहाँ देश की मुख्य जातियाँ ही नहीं मिलती बल्कि विभिन्न जनजातियों, उपजातियों तथा विदेश से आई जातियों के वंश भी यहाँ पाये जाते है।[6] जाति व्यवस्था में प्रत्येक जाति के अपने परम्परागत पेशे रहे है और उन्हें छोड़ना प्राय: उचित नहीं समझते। यद्यपि कुछ ऐसे भी व्यवसाय है जैसे - खेती, व्यापार तथा सेना की नौकरी आदि सभी जातियों के लोग चुन सकते है।[7] मारवाड़ में यो तो खेती बहुत कौमे करती है लेकिन खासकर करसणीक यानी काश्तकार कौमें जाट, माली, पिटल, बिश्नोई, सीरवी और कलवी है, जो खेती के अतिरिक्त बहुत कम दूसरा धंधा करते हैं।[8]

माली जाति मालाकार और बागवान नाम से भी पुकारी जाती है और यह समाज भी स्वयं को अपने भाटों की चलाई हुई कथा के अनुसार महादेव और पार्वती के हाथों से ही निर्मित हुआ मानता है तथा ऐसा माना जाता है कि भगवान महादेव ने जंगल की सुरक्षा करने और तरक्की देने के निमित्त सर्वप्रथम जिस आदमी को बनाया वह 'वनमाली' कहलाया और बाग-बगीचे लगाने के लिए दूसरा पुतला तैयार किया, वह 'फूलमाली' के रूप में प्रसिद्ध हुआ।[9] पीछे से इनमें कुछ क्षत्रिय भी, परशुरामजी के समय में जब कि वे अपने पिता के वेर में पृथ्वी को निक्षत्रिय करते थे, मिल गये। मुस्लिम शासनकाल में इस कौम की तरक्की हुई जब कि उनके डर से बहुत से राजपूत माली बनकर मुक्त हुए। उस समय पुरातन मालियों के लिए महुर माली का नाम निकला अर्थात् पहले के जो माली थे वे महुर कहलाने लगे महुर के मायने पहिले के है।[10] माली जाति का बहुत कुछ संसर्ग द्विजन्य के साथ मिलता है और इनमें कई भेद क्षत्रियों के भी विद्यमान है। यह जाति मथुरा के राजा कान्ह की सन्तान है, इनमें पंवार, फूलमाली, मथुरिया, कछवाहा, तथा काछी आदि प्रसिद्ध क्षत्रिय उपभेद है।[11] माली का मूल शब्द 'मालाकार' है अर्थात् माला बनाने वाला।[12] माली जाति विभिन्न नामों यथा- मालाकार, बागवान, सैनी सैनिक क्षत्रिय आदि नामों से पुकारी जाती है। जिस प्रकार राजवंशों में गुर्जर महिला राजकुमारी को दूध पिलाने को रखी जाती है, वैसे ही इस जाति की महिलायें भी राजवंशों में धाय रखी जाती है, जिनके पुत्र धाय भाई कहलाते है।[13] माली

यद्यपि कृषक जातियों में शामिल है, पर ये अन्य व्यवसाय भी करते है। पहले वे व्यवसाय के आधार पर दो अलग-अलग समूहों में बँटे हुए थे, जो ग्रामीण आबादी से थे और पूरी तरह से खेती करते थे, उन्हें बनमाली कहा जाता है। जबकि जो केवल फूलों की खेती करते थे, उन्हें फूलमाली कहा जाता था लेकिन अब यह भेद नाममात्र का रह गया है।[14]

माली जाति की उत्पति के संबंध में कहा जाता है, जो पुराने समय से चले आ रहे है, वे मोर माली के नाम से प्रसिद्ध है। मोर का अर्थ है, प्राचीन। दूसरे वह माली है, जिनमें राजपूतों के अनेक वंश मिल गये है। इस संबंध में एक कहानी है कि एक बार शहाबुद्दीन गौरी ने बहुत से राजपूतों को जेल मे डाल दिया था उन दिनों बादशाह के यहाँ बाबा नाम का एक माली नौकर था, बाबा को उन राजपूतों पर दया आयी। उसने इस शर्त पर कि राजपूत कारावास से मुक्त होकर माली बन जायेंगे, राजपूत न रहेंगे, बादशाह से उनकी मुक्ति की सिफारिश की। बादशाह ने बाबा की बात मान ली और राजपूतों को कारावास से मुक्त कर दिया, अत: कारावास से मुक्त होकर उन राजपूतों ने माली का व्यवसाय ग्रहण कर लिया। इन मालियों में से कुछ अभी तक अपना राजपूती गोत्र स्थिर रखे हुए है, परन्तु कुछ ने उसे त्याग कर अपने नाम के साथ अपने निवास स्थान का नाम जोड़ लिया है।[15] एक अन्य स्थानीय जनश्रुति के अनुसार कुछ राजपूतों को शहाबुद्दीन गौरी ने कैद कर लिया और बादशाह के मुख्य बागवान ने जिसका नाम बाबा जी था, बीच-बचाव करके छुड़ा लिया तब से उन्होंने बागवानी का पेशा ग्रहण कर लिया। इस प्रकार वे माली बन गये और उनमें राजपूतों के समान गौत्र (खांपें) पाए जाती हैं जैसे चौहान, सोलंकी, भाटी, तुंवर आदि।[16]

माली जो कि दूसरी बड़ी जाति है अधिकांशत: जयपुर, मारवाड़, कोटा, अलवर, मेवाड़, भरतपुर, बूँदी और अजमेर-मेरवाड़ा में बसते है। ये लोग राजपूतों से अपनी उत्पत्ति बताते हैं। इनका हुक्का-पानी, खाना-पीना, जाट और राजपूतों के साथ होता है,[17] ये अपनी उत्पत्ति महादेव जी के मेल से बताते है। बकौल माली समुदाय जब महादेव जी ने अपने रहने के लिए कैलाश पर्वत बनवाया तो उसकी सुरक्षा के लिये अपने मैल से एक पुतला बनाकर उसमें जान डाली और उसका नाम बनमाली रखा। तत्पश्चात् उसके 2 धड़ें अर्थात् वनमाली और फूलमाली हो गये। अत: जिन्होंने वन अर्थात् कुदरती जंगलों की सुरक्षा की और उनका विकास किया, वे वनमाली कहलाये और जिन्होंने अपनी विद्वता और कारीगरी से पड़ी हुई जमीनों में बाग और बगीचे लगाये और उम्दा फूल-फल पैदा किये, उनकी संज्ञा फूलमाली हुई।[18] महुर जाति के लोग काश्तकारी में बहुत कुशल है।[19] इनको बागवान भी कहते है। ये लोग कुँओं द्वारा सिंचित भूमि पर ही ज्यादा निर्भर रहते हैं। मूल माली के दो धड़ें

थे – वनमाली और माली। महुर माली पूर्वी राजस्थान में बड़ी संख्या में निवास करते हैं। महुर मालियों में से मुरार माली निकले है। पूर्वी राजस्थान के लोग अपने नाम के आगे गोत्र न लिख कर सैनी लिखते है। जोधपुर में महुर माली बहुत ही कम है। जो मध्यकाल में पूर्वी जिलों से आये। शेष सब उन लोगों के वंशज है जो राजपूतों से माली बने थे और इनके 12 गौत्र है – कछवाहा, पड़िहार, सोलंकी, पंवार, गहलोत, साँखला, तँवर, चौहान, भाटी, राठौड़, देवड़ा व दहिया। मारवाड़ में राजपूत माली ज्यादा है।[20]

इस जाति की मौजूदा रीति–रस्म और चालू गौत्र (खाँप–उपनाम), खान–पान वहीं पाये जाते है जो क्षत्रियों के चले आये है और खासकर इस जाति में जो गौत्र है उनमें एक भी ऐसा गौत्र नहीं है जो क्षत्रिय वर्ण के सिवाय और किसी वर्ण का हो[21] फूलमाली, भागीरथ माली और सैनी क्षत्रिय एक ही है और ये कौम पहले मथुरा में बसती थी, यही लोग जालंधर में रहते थे और सैनी कहलाते थे।[22] माली इससे ज्यादा अपना हाल नहीं जानते। अधिक जानकारी के लिये अपने भाटों पर निर्भर करते है। जोधपुर में ब्रह्मभट्ट नानूराम इस कोम का होशियार भाट है और उसके पास बहुत सा पुराना हाल मालियों का लिखा हुआ है।[23]

विद्वानों के अनुसार माली क्षत्रिय है। गौतम स्मृति के अध्याय 10 के दूसरे परपाट में यह श्लोक है –

यथोक्तान कृषि वाणिज्यें चास्वयं कृते कुसीदं च यज्ञः

अर्थात् क्षत्रिय के विशेष कार्य प्रजापालन के सिवाय खेती–बाड़ी व शिल्पकारी बताए हैं। राजपूत अपना खास काम राज करना समझते है। मगर राज करने वाले राजपूत (क्षत्रिय) बहुत थोड़े है। बाकी सब खेती करते है। क्षत्रियों (राजपूतों) में दो समुदाय होते है। एक तो वे लोग जो युद्ध सेवा में रणक्षेत्र में जाते है और दूसरे वे जो 'रिजर्विस्ट' कहलाते हैं और रक्षित फौज में भर्ती होते है तथा समय आने पर साथ देते हैं। सैनिक क्षत्रिय जाति के लोग दूसरे दर्जे में गिने जाते है।[24]

अत: इस कौम ने क्षत्रिय कौम से निकल कर बगीचा लगाना शुरू किया और खेती भी करने लगे, फूल–फल, साग–पान करने के कार्य करने लगे।[25] राजपूत कृषि में लगकर निहत्थे हो गये तो उन्होंने अपने शान्तिमय जीवन को एक नए रूप में आरम्भ किया। अपने समाज में कई सुधार भी किए।[26] क्षत्रिय लोग माली का पेशा करने से राजपूत माली याने क्षत्रिय माली कहे जाने लगे और कुछ प्रान्तों में वर्तमान में भी कहलाते हैं। जैसा कि जोधपुर (मारवाड़) राज्य की सन् 1891 ई. की *मर्दुमशुमारी रिपोर्ट* हिन्दी के पृ. 83 में **राजपूत माली** शीर्षक से लिखा है।[27] यह लोग पहले क्षत्रिय ही थे। जिसके लिए कई प्रमाण

है –

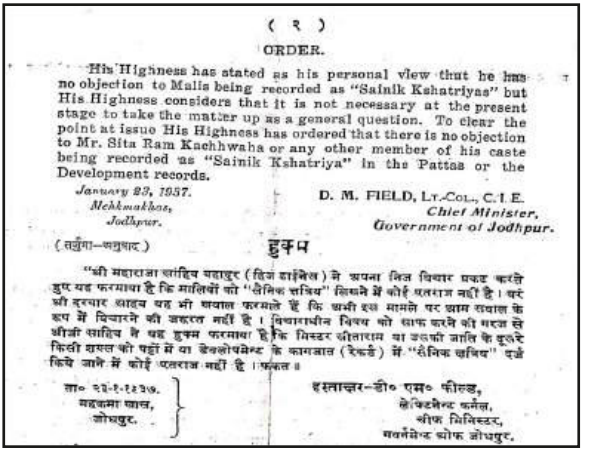
- सैनी (सैनिक) क्षत्रियों में वहीं वंश खांपे है जो राजपूतों में प्रचलित है। एक भी अपवाद नहीं है जो किसी भी दूसरी जाति से संबंध रखता हो।[28]
- इनके रिवाज, रीति-रस्में, सदाचार, व्यवहार, शारीरिक संगठन और आकृति राजपूतों से घनिष्ठता में मिलती है और अपनी खांप बचाकर विवाह करते है।[29]
- मण्डोर में मारवाड़ के राजपूत जागीरदारों की भांति इनमें भी ईशर निकालने की प्रथा प्रचलित है।
- राजपूतों की ही भाँति पिता के जीवित रहते लड़का 'कुँवर' और पौत्र 'भंवर' तथा मृत्युपरांत 'ठाकुर' कहलाता है।[30]
- क्षत्रिय वंश की परम्परा जो इनमें पाई जाती है वह इस जाति में विविध घरानों तथा गौत्रों में बही भाटों (बड़वा राव, ब्रह्मभट्ट) द्वारा कदीम से कायम है।
- इनके कुछ हकूक (अधिकार) ऐसे चले आते है, जिनसे मालूम होता है कि इस जाति को एक खास रूतबा या दर्जा आज तक हासिल है। मिसाल के तौर पर मण्डोर (जोधपुर) में राठौड़ राजघराने के शमशान है, वही पर इस जाति के अंत्येष्ठी के अधिकार अब तक है।[31]

जब सन् 1900 ई. में चीन का युद्ध हुआ था और ब्रिटिश सरकार के लिये जोधपुर नरेश श्री महाराजा सर सरदार सिंह जी साहेब बहादुर जी.सी.एस.आई. ने अपने चाचा सुप्रसिद्ध योद्धा महाराज कर्नल सर प्रतापसिंह बहादुर (ईडर नरेश) के नेतृत्व में कमांड भेजी, जिस सरदार रिसाले में उनके रिसालेदार चतुरसिंह कछवाहा व उनके छोटे भाई धूड़सिंह दफैदार आदि की हैसियत से वहाँ जाकर के बहुत सम्मानसूचक मंडल व तमगे आदि प्राप्त किये। यह ध्यान देने योग्य बात है कि जोधपुर राज्य रिसाले में केवल शुद्ध राजपूत ही लिये जाते थे।[32]

उपर्युक्त उद्धरणों व प्रमाणों के आधार पर यह निर्विवाद प्रमाणित होता है कि सैनी या सैनिक क्षत्रिय माली क्षत्रिय वर्ण है तथा उसके पेशे को लेकर किसी प्रकार का भ्रमोत्पादक सिद्धान्त लागू नहीं किया जा सकता।[33] यद्यपि मर्दुमशुमारी सन् 1931 के मौके पर जोधपुर स्टेट के सरकारी अखबार 'मारवाड़ गजट' (जोधपुर गवर्नमेंट गजट) में राज्य की ओर से यह आम हुक्म प्रकाशित हो चुका था कि जो स्वजाति भाई अपनी जाति 'सैनिक क्षत्रिय' लिखाना चाहे उनको वैसा ही सरकारी कागजात में लिख दिया जाये।[34]

इन बातों पर गौर फरमा कर श्री महाराज साहब बहादुर ने श्रीमान् चीफमिनिस्टर

साहब के द्वारा जो हुक्म इस प्रार्थना पत्र पर फरमाया है उसको मय हिन्दी तर्जुमा के नीचे दिया गया है –



(२)

ORDER.

His Highness has stated as his personal view that he has no objection to Malis being recorded as "Sainik Kshatriyas" but His Highness considers that it is not necessary at the present stage to take the matter up as a general question. To clear the point at issue His Highness has ordered that there is no objection to Mr. Sita Ram Kachhwaha or any other member of his caste being recorded as "Sainik Kshatriya" in the Pattas or the Development records.

January 23, 1937.
Mehkmakhas,
Jodhpur.

D. M. FIELD, Lt.-Col., C.I.E.
Chief Minister,
Government of Jodhpur.

(तर्जुमा–अनुवाद)

हुक्म

"श्री महाराजा साहिब बहादुर (हिज हाईनेस) ने अपना निज विचार प्रकट करते हुए यह फरमाया है कि मालियों को "सैनिक क्षत्रिय" लिखने में कोई एतराज नहीं है। परंतु श्री दरबार साहब यह भी ख्याल फरमाते हैं कि अभी इस मामले पर आम सवाल के रूप में विचारने की जरूरत नहीं है। विचाराधीन विषय को साफ करने की गरज से श्रीजी साहिब ने यह हुक्म फरमाया है कि मिस्टर सीताराम या उनकी जाति के दूसरे किसी शख्स की पट्टों में या डेवलोपमेन्ट के कागजात (रेकर्ड) में "सैनिक क्षत्रिय" दर्ज किये जाने में कोई एतराज नहीं है। फकत॥

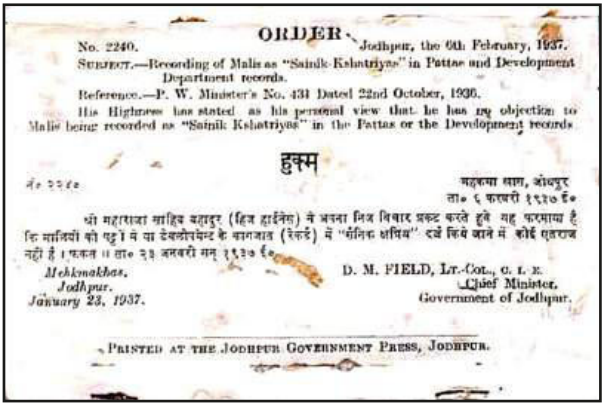
ता० २३-१-१९३७.
महकमा खास,
जोधपुर.

हस्ताक्षर–डी० एम० फील्ड,
लेफ्टिनेन्ट कर्नल,
चीफ मिनिस्टर,
गवर्नमेन्ट ऑफ जोधपुर.

1937 का जोधपुर राज्यादेश: सैनी क्षत्रिय पहचान

जोधपुर सरकार प्रेस, जोधपुर राज्य (23 जनवरी, 1937)

इसमें माली समुदाय के कुछ वर्गों को सैनी या सैनी क्षत्रिय के रूप में पहचानने की अनुमति दी गई थी।[35] इसी प्रकार एक अन्य आदेश 6 फरवरी 1937 को निकाला था जिसमें कहा गया था। महाराजा साहेब बहादुर (हिज हाईनेस) को मालियों के पट्टों में या



ORDER.

No. 2240. Jodhpur, the 6th February, 1937.

SUBJECT.—Recording of Malis as "Sainik Kshatriyas" in Pattas and Development Department records.

Reference.—P. W. Minister's No. 431 Dated 22nd October, 1936.

His Highness has stated as his personal view that he has no objection to Malis being recorded as "Sainik Kshatriyas" in the Pattas or the Development records.

हुक्म

नं० २२४०

महकमा खास, जोधपुर
ता० ६ फरवरी १९३७ ई०

श्री महाराजा साहिब बहादुर (हिज हाईनेस) ने अपना निज विचार प्रकट करते हुये यह फरमाया है कि मालियों को पट्टों में या डेवलोपमेन्ट के कागजात (रेकर्ड) में "सैनिक क्षत्रिय" दर्ज किये जाने में कोई एतराज नहीं है। फकत॥ ता० २३ जनवरी सन् १९३७ ई०

Mehkmakhas,
Jodhpur.
January 23, 1937.

D. M. FIELD, Lt.-Col., C. I. E.
Chief Minister,
Government of Jodhpur.

PRINTED AT THE JODHPUR GOVERNMENT PRESS, JODHPUR.

रिकॉर्ड में **सैनिक क्षत्रिय** दर्ज किये जाने में कोई एतराज नहीं है।[36]

मारवाड़ के माली (सैनी क्षत्रिय) समाज ने कृषि और अन्य उद्योगों में अपनी दक्षता सिद्ध की है। उनकी कर्मठता और राज्य के प्रति निष्ठा के कारण ये सामाजिक व

प्रशासनिक व्यवस्था का एक अभिन्न अंग है।[37] इसके साथ ही युद्ध क्षेत्र में भी सैनी क्षत्रिय (माली) पीछे नहीं रहे है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद स्थल, वायु सेना में स्व जाति के अनेक युवा भर्ती हुए है। कई वीर योद्धाओं को विशिष्ट सेना अलंकार मिले थे।[38] इतिहास गवाह है कि माली (सैनी क्षत्रिय) समाज का सैन्य सेवाओं में योगदान गौरवपूर्ण रहा है। भारतीय सेना में इस समाज के युवा सबसे अधिक अपनी सेवाएँ देते रहे है।

सैनी जाति के इतिहास में हम इसी नतीजे पर पहुँचते है कि ये जाति किसी समय में क्षत्रिय वर्ग के अन्तर्गत सब जातियों में मुख्य शूरवीर थी और पेशे के लिहाज से कोई जन इस भ्रम में नहीं पड़ सकता कि क्षत्रिय के गुणों से ये जाति किसी कदर रहित है[39] और सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए प्रयासरत है।

संदर्भ

1. *मनुस्मृति,* 10वाँ अध्याय, श्लोक 4 (10.4)
2. *ऋग्वेद,* मण्डल-10, सूक्त-90, (90वाँ सूक्त पुरूष सूक्त)
3. जगदीश सिंह गहलोत, *मारवाड़ राज्य का इतिहास,* महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, दुर्ग, जोधपुर, पृ.334
4. कैलाशनाथ व्यास, देवेन्द्र सिंह गहलोत, *राजस्थान की जातियों का सामाजिक व आर्थिक जीवन,* भारत प्रिंटर्स, जोधपुर, 1992, पृ.12
5. जगदीश सिंह गहलोत, *राजस्थान का सामाजिक जीवन,* हिन्दी साहित्य मन्दिर, जोधपुर, पृ.11
6. एल.आर. भल्ला, *राजस्थान एक विस्तृत अध्ययन,* भाग-तृतीय, कुलदीप प्रकाशन, पृ.51
7. कैलाशनाथ व्यास, देवेन्द्र सिंह गहलोत, पूर्वोक्त, पृ.14
8. मुंशी हरदयाल सिंह, *मर्दुमशुमारी रिपोर्ट राजमारवाड़-1891,* पृ.80
9. रमेशचन्द्र गुणार्थी, *राजस्थानी जातियों की खोज,* 1950, पृ.138
10. मुंशी हरदयाल सिंह, *रिपोर्ट मरदुमशुमारी राजमारवाड़-1891,* ई., पृ.81
11. पं. छोटेलाल शर्मा, (महामंत्री हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मण्डल, फुलेरा) जाति अन्वेषण, भाग-1, पृ.3
12. बलदेव सिंह , *सैनी क्षत्रिय समाज का इतिहास,* शीतल प्रिन्टर्स, पृ.11-12

13. जगदीश सिंह गहलोत, पूर्वोक्त, पृ.16
14. मुंशी हरदयाल सिंह, *द कास्ट ऑफ मारवाड़,* पृ. 44
15. बजरंग लाल लोहिया, *राजस्थान की जातियां,* 1984, पृ.32
16. *मारवाड़ मनुष्य गणना रिपोर्ट, सन् 1891 ई.,* भाग-II (अंग्रेजी) राय बहादुर मुंशी हरदयाल सिंह के तत्वावधान में लिखित मारवाड़ राज्य की अंग्रेजी जनगणना
17. बलदेव सिंह 'आजाद', पूर्वोक्त, पृ.32
18. मुंशी हरदयाल सिंह, *रिपोर्ट मरदुमशुमारी राजमारवाड़-1891,* पृ.80-81
19. कैलाशनाथ व्यास, देवेन्द्र सिंह गहलोत, पूर्वोक्त, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, पृ.123
20. वही, पृ.124
21. तुंवर वर्मा, श्रीयुत, कु. ठाकुर सिंह जी, *सैनी क्षत्रिय समीक्षा,* शान्ति प्रेस, मोती कटरा
22. *जालंधर, (पंजाब,) सरकारी गजेटियर,* 1904
23. *रिपोर्ट मरदुमशुमारी राजमारवाड़-1891,* पृ.81
24. वचनसिंह शेखावत (निराधना, शेखावटी), *सैनिक क्षत्रिय कौन है ?,* प्रकाशक-राजस्थान क्षत्रिय महासभा, राजपूत सभा भवन, जयपुर 1952 ई. पृ.6
25. गुमनाराम नवला भाटी, *श्री माली जाति ज्ञान प्रकाश याने किसान बंधु,* श्री माली जाति सुधारक सेवा मंडली, अहमदाबाद, पृ.12
26. बलदेव सिंह 'आजाद', पूर्वोक्त, पृ.35
27. कुंवर श्यामस्वरूप सिंह परिहार, *सैनी क्षत्रिय प्रदीप,* शान्ति प्रेस आगरा, 1921 ई., पृ.19
28. बलदेव सिंह 'आजाद', पूर्वोक्त, पृ.36
29. वचन सिंह शेखावत, पूर्वोक्त, पृ.10
30. बलदेव सिंह 'आजाद', पूर्वोक्त, पृ.37
31. वचन सिंह शेखावत, पूर्वोक्त, पृ.11
32. श्यामस्वरूप सिंह परिहार, *सैनी क्षत्रिय प्रदीप,* पूर्वोक्त, पृ.-12 मारवाड़ की कौमों का इतिहास व उनके रीति-रस्म, *रिपोर्ट मरदुमशुमारी सन् 1891 ई.,* भाग-3, पृ.559

33. बलदेव सिंह 'आजाद', उपर्युक्त, पृ.38
34. *मारवाड़ गजट* (जोधपुर गवर्मेन्ट गजट), जिल्द 66, नम्बर 21, ता. 21 फरवरी, 1931, पृ.284
35. *जोधपुर राज्य का अधिकारिक आदेश (1937) जोधपुर*, गवर्मेन्ट प्रेस, जोधपुर द्वारा अधिकारिक आदेश, जोधपुर स्टेट ऑफिशियल ऑर्डर टू रिनेम माली ऐज सैनी ऐज सैनिक क्षत्रिय इन 1937
36. महकमा खास ता. 6 फरवरी 1937, नं.-2240ए, जोधपुर गवर्नमेंट प्रेस, जोधपुर
37. द वेस्टर्न राजपूताना स्टेट रेसीडेन्सी गज़ेटियर, वॉल्यूम-III-A, 1909, पृ. 88
38. बलदेव सिंह 'आजाद', पूर्वोक्त, पृ.44
39. श्यामस्वरूप सिंह परिहार, पूर्वोक्त, पृ.42

सहायक आचार्य
इतिहास विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राज.)